वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जनवरी – 2020

नया वर्ष मुबारक

महोत्सव मुबारक 2019

नया वर्ष मुबारक हो

जब तक धर्म जीवन का यह issue आपके पास पहुँचेगा, नए वर्ष का आगमन हो चुका होगा। आज मेरे लिखने के समय मैं चारों तरफ नया वर्ष मनाने का शोर सुन रही हूं। दुकाने सज रही हैं, रैस्टोरैंटस वा होटल सजाए जा रहे हैं, लोग जल्दी से जल्दी रिज़रवेशन करवा रहे हैं। लोग उस दिन क्या पहनना है, क्या खाना और पीना, कैसे नाचना गाना है, बड़े उत्साह से इसकी तैयारियां कर रहे हैं। आख़िर क्या है 31 दिसम्बर में या क्या नहीं है और नये वर्ष में क्या बदलने वाला है। पिछले वर्ष के दर्द हम भुला देना चाहते हैं, हम भूल जाते हैं कि धर्म, जाति और लिंग के आधार पर क्या क्या अत्याचार हुए है? क्या नये वर्ष में यह सब बन्द हो जाएगा। हमने नन्हीं बच्चियों से बलात्कार की घटनाएं पढ़ी, पता नहीं नये वर्ष में और कितना जुल्म सहना इन बच्चियों के भाग्य में है, क्या पुलिस या भूखे सैक्स के दरिंदे अपनी दरिंदगी छोड़ देंगे? क्या पुलिस भक्षक नहीं रक्षक बन जाएगी? क्या धर्म के नाम पर जो अत्याचार वा भेदभाव हो रहे हैं और बहुत सारे बेगुनाहों को जेलों में भेजा जा रहा है, उन्हें न्याय मिल सकेगा? भृष्टाचार जो चर्मसीमा पर है, नये वर्ष में ईमानदारी के झण्डे गाड़ देगा? जो धर्म के नाम पर नफरत फैलाई जा रही हैं, वह प्रेम में बदल जाएगी? क्या किसी अन्याय के विरूद्ध बोलने वालों को बोलने की स्वतंत्रता मिल जाएगी? क्या विद्यार्थियों को अपने हकों के लिए सड़कों पर नहीं उतरना पड़ेगा? क्या पुलिस झूठे केसों में लोगों को फंसाना बन्द कर देगी? क्या अन्याय पूर्ण फैसलों के विरूद्ध बोलने वालों की आवाज़ सुनी जाएगी? क्या 7 वर्ष से निर्भया की मां को अब भी इन्साफ मिल सकेगा? क्या निर्भया जैसी अनेकों लड़कियों की इज्ज़त यह समाज वापिस कर सकती है। क्या जो पैसा गरीबों के लिए सरकार देती है, वह उनकी जेब तक पहुँचेगा? क्या अब समझदारी वा सचाई की आवाज़ को बन्द नहीं किया जाएगा?

इसका उत्तर हम अपने मन में सोचें, इसमें से कुछ भी नहीं होगा। यह अत्याचार और बढ़ेंगे। समाज में धर्म और जाति का भेदभाव इतना बढ़ाया जा रहा है कि एक योगय संस्कृत के प्रोफैसर को बनारस विश्व विद्यालय से इसलिए निकाल दिया कि वह किसी और धर्म के थे, अर्थात हिन्दु या पण्डित नहीं थे। यूनिवर्सिटियों में पढ़ने वाले छात्र अपनी मानसिक योग्यता के कारण यहां तक पहुँचते हैं, उनकी आवाज़ क्यों नहीं सुनी जाती। यहां तक तोड़ फोड़ का सम्बन्ध है, वह ग़ल्त है, जब किसी की आवाज़ नहीं सुनी जाती तो इन्सानी फितरत है कि वह ग़ल्त राह पर पड़ जाती है।

पिछले वर्षों में कुछ अच्छे काम हुए हैं, परन्तु जिन ग़ल्त फैसलों से जनता में रोष है, काश! इस नये वर्ष में उनको सुनने का सरकार साहस पैदा करे। आज जो विद्यार्थी सड़कों पर हैं, कई बेगुनाह मारे गए, कई जेलों में फैंके गए, उससे जो डर का महौल बन गया है, उसका छोटा सा हल अगर नये वर्ष में हो जाए, कि जो बिल पास हुआ है, उस पर पुर्निविचार किया जाए तो यह आग थम सकती है, फिर जनता के हित को सामने लाकर फैसला हो तो यह नया वर्ष मुबारक हो सकता है।

मैं तो हैरान हूँ कि देश में आग लगी हुई है, हमारे दिल कैसे मानते हैं कि हम नये वर्ष की खुशीयां मनाएं? नया वर्ष तभी मुबारक हो सकता है यदि कुछ नशे घटें, बलात्कार बन्द हो, भृष्टाचार बन्द हो, मिथ्या

बाकि पेज़ 20 में

धर्म जीवन

खण्ड 31 अंक 1
जनवरी - 2020
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

महोत्सव मुबारक - 2019

परम पूजनीय भगवान देवात्मा संस्थापक देव समाज का 169वा मुबारक शुभ जन्म महोत्सव देव आश्रम, निकट डेराबस्सी चंडीगढ़ में पिछले सालों की तरह बड़े उत्साह और श्रद्धा पूर्वक 11 दिसंबर, 2019 से 14 दिसंबर तक मनाया गया। हालांकि सन्मान के योग मंत्री श्रीमान बलदेव सिंह जी अचानक कुछ दिन पहले ही सेहत के खराब होने की वजह कारण आप पहुंच नहीं सके पर उनकी रहनुमाई और प्रेरणा से सब धर्म संबंधियों ने इस पावन महोत्सव पर पहुंचकर अपने-अपने शुभ संग्राम करके सहयोग किया। इस पावन पर्व के मनाने के लिए जरूरी तैयारियां की गई। सभा हाल के बाहर शैड को नई टीन चद्दरों द्वारा तैयार करवाया गया, रंग रोगन किया गया धर्म संबंधियों के लिए नए और बिस्तरे तैयार करवाए गए। टीन की चद्दरों की सेवा में श्रीमान ओम प्रकाश जी वर्मा और श्रीमान जगजीत सिंह जी ने दान से विशेष सहयोग दिया। महोत्सव हाल को अंदर से विशेष सफेद पेंट कराई गई। देववाणी के मोटोज, झंडियों आर्टिफिशियल फूलों और सुंदर वॉलपेपर द्वारा दीवारों को सजाया गया कुछ कर्मचारियों के फोटो सजाए गए। प्रबंध आदि की बहुत सी सेवाओं में सदा की तरह श्रीमान जगदीश जी कई दिन पहले से ही चंडीगढ़ से पहुंचकर खास मेहनत से तैयारियां करवाते रहे, इनके परिवारिक जनों ने भी सभा हाल को सुंदर सजाने में सहयोग किया। सारे देव आश्रम को साफ सुथरा कराया गया आंगन को सजाने में श्री रमेश जी ने अच्छी मेहनत की। रास्ते के दोनों साइडों के वृक्षों पर सफेदी की और काफी मात्रा में फूलों के पौधे लगाए, 30-40 गेंदे के नए गमले तैयार किए गए और रंग रोगन करके सभी गमलों को एक रूप में सजाया गया। इनके साथ गोपाल जी और विक्की जी के सहयोग से गुब्बारों और फूलों की लड़ीयों द्वारा खास सजावट की गई। श्रीमान जगजीत सिंह जी भी लुधियाना से 1 दिन पहले पहुंच गए और उत्साह से सेवाकारी होते रहे। बीबी भजन कौर जी श्रीमान सुखदेव जी इंग्लैंड की बहन सबसे पहले पहुंचे हुए धर्म संबंधियों की नाश्ते खाने आदि की दिली इच्छा से सेवा करती रहीं। हाल के अंदर कारपेट वा गद्दों द्वारा सजाया गया। विशेष स्टेज पर गुरू महाराज की सुंदर छवि को स्थापित किया गया। छवि को चारों तरफ से बिजली की रोशनी की लड़ियों द्वारा सजाया गया। सभा हॉल में यात्रियों के बैठने के लिए अलग-अलग रंग के कवर चढ़ाकर कुर्सियों को सुंदर तरतीब से रखा और सजाया गया। पूरे हाल की सजावट सौंदर्य बोधों को प्रकट कर रही थी। लंगर का बहुत बढ़िया प्रबंध किया गया। धर्म संबंधियों को चाय दूध नाश्ता, दोपहर और शाम का खाना समय समय पर सर्व होता रहा। इसकी

देखरेख और वितरण में मल्लेका की पार्टी नरेंद्र जी, अशोक जी, अनिल कुमार जी, बीबी वंदना जी और कई अन्य धर्म संबंधी सेवाकारी होते रहे। सुबह गर्म पानी का भी प्रबंध होता रहा जिसमें सुखदेव सिंह जी, बलदेव सिंह जी गुरुदेव राज जी और श्रीमान बूटा सिंह जी सेवा करते रहे। पूजनीय भगवान का और अन्य उच्च हस्तियों के जीवन चरित्र अन्य साहित्य की पुस्तकों की स्टाल लगाई गई जिसमें खेड़ा साहब की तरफ से प्रकाशन की हुई पुस्तकें, भल्ला जी और चौहान साहब की तरफ से प्रकाशित पुस्तकें भी शोभायमान थी। प्रवेश सभा से पहले ही सारा आश्रम साफ सुथरा और सुंदर चमकाया हुआ था आंगन, लंगर हाल सभा का हाल और रिहायशी कमरों को सुंदर ढ़ग से तैयार किया गया था।

धर्म संबंधियों और अन्य श्रद्धालु जनों ने महोत्सव पर श्रद्धा से पहुंचकर बड़ा ही सुंदर नजारा पेश किया। इस बार खासतौर से लुधियाना से सन्मान के योग्य श्रीमान भल्ला जी और इनके साथ अच्छी गिनती में धर्म सम्बन्धी पहुंचे। श्री अकबरपुर से भी माननीय श्रीमान चौहान जी उनके पुत्र देव सुमन जी और प्रिंसिपल सुभाष जी पहुंचे। इसके अलावा बठिंडा, गोनियाना, कल्याण, मल्लेका, केसुपुरा, पदमपुर, गजसिंहपुर, गंगानगर, अंबाला, चंडीगढ़, पंचकूला, पटियाला, संगरूर, कपूरथला, सहारनपुर, बलटाना, मेरठ, लखनऊ आदि स्थानों से अच्छी गिनती में धर्म सम्बन्धी पहुंचे।

सभाएं सन्मान के योग्य श्रीमान बल बहादुर सिंह जी, माननीय श्रीमान के यशपाल भल्ला जी और श्रीमान चौहान जी ने करवाई।

प्रिंसिपल श्रीमती शशि जैन और श्री विनोद खेड़ा जी ने पब्लिक लेक्चर दिए। सभी सभाएं और लैक्चर बड़े प्रभावशाली और ज्ञान से भरपूर थे जिनसे प्रभावित होकर हाजरीन में से कई जन बाद में भी बयान करते रहे।

पूजनीय भगवान के जन्म दिन के खास मौके पर बैंड बाजे का भी प्रबंध किया गया जो कि विशेष समय पर सुरताल से इस खुशी के मौके पर बजाया गया। कुछ धर्म सम्बन्धियों ने नाच नाच कर इसमें अपनी पवित्र खुशी का इजहार किया। इस मौके पर इस उपलक्ष्य में गुरु महाराज के आविर्भाव का शुभ पैगाम और मुबारकबाद और उनके प्रभावों द्वारा हुए दुनिया में मनुष्यों और अन्य विभागों के परिवर्तनों को बड़े जोर शोर से श्रीमान चौहान जी और फिर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने पेश किया। दोपहर को बच्चों की सभा भी हुई और उसके बाद मैडम पूजा द्वारा सुन्दर भजनों का गान हुआ और धर्म संबंधियों ने रात को भी भजनों का विशेष गान किया। सारे प्रोग्राम और मंडल प्रभावशाली और खुशियां देने वाला था।

शोक समाचार

बहुत शोक की बात है कि हमारे प्रिय धर्म संबंधी श्रीमान जलधर जी, बिहार, जो कि वर्तमान में चंडीगढ़ में निवास कर रहे हैं उनके बुजुर्ग पिताजी उम्र 86 वर्ष का पटना अस्पताल में 19 - 12 - 2019 को देहांत हो गया है। हम अपने धर्म संबंधी कि उनकी इस शौक ग्रस्त और संतप्त अवस्था में अपने दुख और हमदर्दी का प्रकाश करते है और देह त्यागी आत्मा की शांति और सहायता के लिए शुभकामना करते हैं।

-मंत्री, देव समाज (G)

प्रवेश सभा

11 – 12 – 2019, बुधवार, सांय 4.30 बजे :– सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, भजन के बाद सुन्दर पुष्प हार के द्वारा परम पूजनीय भगवान देवात्मा की सुन्दर छवि का अर्चन किया गया। देव स्तोत्र के समूह गान के बाद श्रीमान सभापति जी ने व्याख्या की। फिर एक और भजन का गान किया गया। फिर सभापति जी ने पावन महोत्सव की कामयाबी और इससे अधिकारी जन लाभ उठा सकें, इसके लिए आर्शीवाद प्रार्थना की। सहायकारी शक्तियों वा परलोक वासी उच्च आत्माओं की सहायता के लिए शुभ कामना की।

सभापति जी ने इस पावन महोत्सव के विशेष महत्व का ब्यान करते हुए बताया कि इस वर्ष कई बड़े बड़े उत्सव मनाए गए हैं, जिनमें लाखों लोग शामिल हुए हैं, करोड़ों रुपये खर्च किए गए हैं। इस पावन महोत्सव की महानता गिणती वा खर्च पर निर्भर नहीं। उपरोक्त उत्सवों पर क्या किसी में कोई परिवर्तन आया होगा? क्या किसी ने रिश्वत या और किसी पाप से तोबा की होगी? यह प्रश्न विचारशील व्यक्तियों के विचार का विषय होना चाहिए। इस पावन महोत्सव के वातावरण के बिना किसी मनुष्य को अपने सार अस्तित्व आत्मा का ज्ञान ही नहीं मिलता। अपने भले की कोई उच्च प्रेरणा भी नहीं मिलती। जीवन के हित अहित का कोई बोध नहीं मिलता। पाप जीवन से तोबा करने की कोई प्रेरणा भी नहीं मिलती। इस पावन महोत्सव पर अधिकारी जनों के हृदयों पर देव प्रभावों की वर्षा होती है। अनेक जीवनों की काया कल्प हुई है। अधिकारी मनुष्यों के सम्बन्ध स्वर्गीय बने हैं। ऐसे स्वर्गीय जीवनों वा परिवारों के सभापति जी ने प्रभावशाली ढंग से उदाहरण पेश किए।

सभापति जी ने खड़े होकर इस पावन तीर्थ पर आए जनों का झुककर, हृदय-गत भावों से अभिनन्दन किया। बार बार मुबारकबाद दी। फिर बताया कि मनुष्य को कौन 2 सी शक्तियां चलाती हैं? उनके द्वारा उसके जीवन का क्या बनता हैं? इनका स्वभाव क्या हैं? नेचर क्या है? इसके नियम क्या हैं? मनुष्य का नेचर के साथ क्या सम्बन्ध है? आत्मा क्या है? आत्मा के रोग क्या हैं? रोगों के द्वारा पतन और पतन से मोक्ष जैसे प्रश्नों का हल इस पावन उत्सव पर सम्भव है जो सच्चे विज्ञान मूलक धर्म के बानी द्वारा प्रदान किया गया है। सभापति जी ने इस विशेष महोत्सव से लाभ उठाने के नियमों का ब्यान किया। दीनता, शुक्रगुज़ारी द्वारा मुख्य रूप से देव प्रभावों के प्रवेश का द्वार खुलता है।

सभा के बाद श्रीमान जी ने सूचनाओं को बताया और अगले दिन के प्रोग्राम की सूचना दी।

12 – 12 – 2019, वीरवार, पहली सभा, सुबह 9.30 बजे :–

विषय :– परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवन दायक सम्बन्ध।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का छवि द्वारा सुन्दर हार से अर्चन। महिमा विषयक भजन के गान और देव स्तोत्र और व्याख्या और फिर "परम आवश्यक जीवन दायक मेरे भगवान का सम्बन्ध" नामक भजन का गान किया गया।

फिर सभापति जी ने पूजनीय भगवान के दरबार में आर्शीवाद प्रार्थना की। उन्होंने बताया कि सभा का विषय बहुत महान है, अपनी तुच्छता और अयोग्यता इस विषय से मेल नहीं खाती।

सम्बन्धों पर ही हमारा जीवन निर्भर है। चारों

जगत भौतिक जगत, वनस्पति जगत, पशु जगत और मनुष्य जगत पर हमारा जीवन निर्भर करता है। विश्व के सारे अस्तित्व इन जगतों पर निर्भर हैं। सूरज, हवा, पानी हमारे जीवन दायक और परम आवश्यक सम्बन्धी हैं। आक्सीजन के बिना, पानी बिना, सूरज की रोशनी के बिना हम जीवित नहीं रह सकते।

मनुष्य जगत से ही हमारे जीवन का आरम्भ है। हमारा जन्म माता पिता के कारण है। इसीलिए माता-पिता को जन्म दाता कहा जाता है।

अब प्रश्न यह है कि जब मनुष्य के जन्म के लिए माता पिता विशेष सम्बन्धी हैं, तो फिर वह कौन सा जीवन है कि जिस के परम पूजनीय भगवान देवात्मा हमारे विशेष वा जीवन दायक सम्बन्धी हैं। यह बहुत गंभीर प्रश्न है। हमारे अस्तित्व में शरीर के निर्माण करने वाली जीवनी शक्ति भी है। माता के गर्भ में यही जीवनी शक्ति मनुष्य का निर्माण करती है। इसके वैज्ञानिक उदाहरण दिए जा सकते हैं। मनुष्य आत्मा की गठन शक्तिमय हैं। इन शक्तियों में प्रधान शक्ति निर्माणकारी शक्ति है। इसी जीवनी शक्ति का नाम आत्मा हैं आत्मा के भीतर जो शक्तियां हैं, उनका ज्ञान वा बोध पाना आवश्यक है। कौन 2 सी शक्तियां हमारी निर्माणकारी शक्ति को हानि पहुँचाती है और कौन 2 सी निर्माणकारी शक्ति को विकसित करती हैं। देवात्मा के बिना इसका ज्ञान किसी ने नहीं दिया और न दे सकता था। क्योंकि देवात्मा के भीतर जो देव शक्तियां आई उनके भीतर ही यह रोशनी आई, जिसमें उन्होंने आत्मा के विषय में विज्ञान मूलक सत्यों वा तत्वों की गूढ़ सचाईयों को खोजा। उन्होंने ने ही यह शिक्षा दी है कि निर्माणकारी शक्ति द्वारा आत्मा का विकास होता है और विनाशकारी गतियों से आत्मा का विनाश होता है। विश्व में ऐसा और कोई सम्बन्ध नहीं जो मानव जगत को यह निराला ज्ञान प्रदान कर सके।

इसके अतिरिक्त देवात्मा के सम्बन्ध से कैसे जुल्म करने वाले हमदर्द और परोपकारी बन जाते हैं, ऐसे परिवर्तन गुरू महाराज ही पैदा कर सकते थे। सरदार हरनाम सिंह जी के जीवन की इन्कलाबी झलकियां पेश की। वह कन्या हनता थे, उन्हें कन्याओं की सेवा में लगा दिया, पशुओं पर जुल्म किए थे, उनके लिए पानी के कुण्ड लगा दिए। एक नौकर पर जुल्म किया था, उसके गांव में जाकर कैसे क्षमा मांगी और अपने जुल्मों का परिशोध किया। यह सारा ब्यान बहुत प्रभावशाली था।

काम अनुरागी भगवान की कृपा से कैसे पवित्र बन गए। स्त्री जाति के रक्षक बन गए। रिश्वत खोर, इस पाप को छोड़ने वा ली हुई रिश्वतें वापिस करने के लिए मजबूर हो गए।

परम पूजनीय भगवान का सम्बन्ध पारिवारिक जीवन में स्वर्ग पैदा करता है। उसके सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किए। कैसे सताई, तड़पाई हुई मां थी, परन्तु देव असरों ने बेटे को इतना बदल दिया और सेवाकारी बना दिया कि वह यह कहने के लिए मजबूर हो गई कि "बेटा, तूने तो मेरे पेट पड़े का बदला उतार दिया।" पति पत्नी का सम्बन्ध महाराज की शरण में आकर कैसे स्वर्गीय बन जाता है, उसका ब्यान किया। यह सारा ब्यान पूजनीय भगवान के साथ सम्बन्ध बनाकर उनके देव प्रभावों द्वारा सम्भव हुआ है, इसलिए सारे मानव जगत के लिए उनका सम्बन्ध परम आवश्यक है।

इस सभा के बाद हमारे दो माननीय धर्म सम्बन्धियों के द्वारा बहुत सुन्दर पुस्तकें छापी गई हैं, उनके विषय में हाजरीन को सूचित किया गया। माननीय श्रीमान यशपाल जी भल्ला और माननीय

डाक्टर विनोद जी खेड़ा बहुत मेहनत से और लाखों रूपया स्वयं लगाकर लगातार यह सेवा कर रहे हैं। जिसके लिए हम सबके वह धन्यवाद वा मुबारक बाद के पात्र हैं। साहित्य रचना देवात्मा के मिशन की बहुत बड़ा सेवा और धरोहर है।

पब्लिक लैक्चर – शाम 4 बजे

विषय – देव धर्म एक क्रान्ति

वक्ता :– माननीय - प्रिंसीपल डाक्टर शशी जैन

सभापति जी – श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान। भजन के बाद सभापति जी ने बहुत सुन्दर शब्दों में डा० शशी जैन का परिचय करवाया कि वह एक बहुत सात्विक परिवार से सम्बन्ध रखती हैं। उनको विरासत और संगत दोनों अच्छी मिली है। यह कहा जा सकता है कि देव समाज की शिक्षा इनके खून में है। यह बहुत बड़ी विद्वान भी हैं। सरकारी नौकरी छोड़कर देव समाज की संस्थाओं में भी काम किया है। देवात्मा की शिक्षा का इन्होंने बहुत अध्ययन किया है। इनका दृष्टिकोण विज्ञान मूलक है। इनके सरल भाषा में अपने विषय की प्रस्तुति से ही आप समझ जाएंगे। इन शब्दों के साथ उन्होंने वक्ता को अपना विषय प्रस्तुत करने के लिए निमन्त्रित किया।

माननीय वक्ता ने सभापति जी को धन्यवाद दिया और बताया कि गुरू की कृपा से हमारे घर में मेल रहा है और शिष्टाचार आया है। उन्होंने क्रान्ति शब्द की व्याख्या करते हुए बताया कि क्रान्ति किसी संस्था, मनुष्य या देश में आया अचानक परिवर्तन नहीं। रूस में फ्रांस में क्रान्ति हुई और हमारे देश में खेती में हरा इन्कलाब (Green Revolution) हुआ यह सब इन्कलाब बहुत संघर्ष के बाद हुए हैं। देव धर्म भी दुनिया में एक इन्कलाब है। उन्होंने अपने लैक्चर को चार भागों में बांटा। पहला भाग ईश्वर है, दूसरा आत्मा की धारणा, तीसरा मोक्ष का विचार, चौथा नैतिक मूल्यों की समझ। बहुत से धर्म नेचर को ही ईश्वर मानते हैं। ईश्वर को सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान और विश्व का कर्ता माना जाता है। पर वैज्ञानिकों ने धरती की बनावट, सूर्य से दूरी, चन्द्रमा की बनावट, दिमाग की विशेषता, D.N.A आदि बताए हैं। परन्तु देव धर्म विज्ञान पर आधारित है। विज्ञान में धरती की उत्पति विकास क्रम की घटनाएं बताई हैं। ईश्वर-विश्वासी कहते हैं कि ईश्वर अपने पैगम्बरों के द्वारा करामातें करता है। देव धर्म नेचर के विश्वव्यापी नियमों के द्वारा आए परिवर्तन को मानता है। गुणात्मिक परिवर्तन पैदा करके देव धर्म का असली Code of conduct अर्थात कर्तव्य कर्मों और वर्जित कर्मों की शिक्षा देकर देव धर्म परिवर्तन पैदा करता है। प्रश्न है कि अगर ईश्वर है तो दुनियां में दिन पर दिन बुराई और पाप क्यों बढ़ रहा है, जबकि ईश्वर के मानने वाले बहुगिणती में हैं।

दूसरा प्रश्न है आत्मा क्या है। इसके विषय में भिन्न धर्म भिन्न मत रखते हैं। कोई आत्मा को ब्रह्म का अंश, कोई अजन्मा, कोई अनादि और अनित्य मानता है। वक्ता ने कहा कि यदि आत्मा ब्रह्म का अंश हैं, तो सब मनुष्य एक जैसे होने चाहिए। भिन्न क्यों है? दूसरा यह धारणा नेचर के विकासकारी नियम के ही विरुद्ध है।

देव धर्म ने आत्मा को गठन प्राप्त जीवित अस्तित्व बताया है। आत्मा में जीवित शक्तियां उसके अंग है। आत्मा का शरीर से अटल सम्बन्ध है। शरीर और आत्मा चारों जगतों से जुड़ा हुआ है। आत्मा निर्लेप नहीं, परिवर्तनशील है। आत्मा अमर नहीं, इसका जन्म होता है, प्रतिकूल परिस्थितियां में मौत भी हो जाती है। आत्मा का विकास भी होता और विनाश भी होता है।

इससे आगे उन्होंने भिन्न भिन्न धर्मों की मोक्ष की शिक्षा के बारे में बताया। जिसमें जन्म मरण

से मोक्ष, वेदान्त की मोक्ष, कुम्भ स्नान द्वारा मोक्ष इस प्रकार की शिक्षा का वर्णन किया। देव धर्म की शिक्षा में मोक्ष का वर्णन किया गया है। पाप कर्मों, दुराचारों, अत्याचारों, मिथ्या विश्वासों से स्वतन्त्र होना मोक्ष है। नीच सुख अनुरागों और उनसे उत्पन्न नीच घृणाओं से मोक्ष सच्ची मोक्ष है। ईर्ष्या, द्वेष, गुस्से से मुक्त होना और उनसे उत्पन्न विकारों से मुक्त होना सच्ची मोक्ष है। यह मोक्ष देवात्मा के देव प्रभावों द्वारा ही सम्भव है। यह क्रान्ति देव धर्म द्वारा आई है।

चौथी क्रान्ति देव धर्म द्वारा लाई गई है नैतिक मूल्यों का विकास। ईमानदारी, पवित्रता, शुक्रगुज़ारी, दया आदि भाव नैतिक विकास करते हैं। इनके विकास से सम्बन्धों में मेल आता है। इन भावों के पैदा करने के लिए देवात्मा के देव प्रभाव दायक सत्संग किए जाते हैं। हृदयों में सन्मान, श्रद्धा पैदा करके सम्बन्धों में नई क्रान्ति गुरु महाराज ने पैदा की है।

इन सचाईयों के आधार पर कहा जा सकता है कि देव धर्म ने धर्म जगत में नई क्रान्ति पैदा की है। यह सारा लैक्चर बहुत विद्ववता पूर्ण और ज्ञानवर्द्धक था।

7.30 बजे रात को संगीत सभा :– इस सभा में श्रीमान सुभाष जी, श्रीमान चन्द्रगुप्त जी, श्रीमान गौतम जी, श्रीमति सुदेश जी खुराना, श्रीमान किशन सिंह जी चौहान आदि धर्म सम्बन्धियों ने श्रद्धा भाव से 1 घण्टे तक भजनों का गान किया।

13 – 12 – 2019, शुक्रवार, सुबह 6.30 बजे महोत्सव का विशेष दिन :– बड़े हाल के सामने, जहां रात को ही लाउड स्पीकर आदि का प्रबन्ध किया जा चुका था – एक ऊंची स्टेज बनाई गई, चारों तफ कालीन बिछाकर विशेष दिन के लिए तैयारी की गई। सुबह 6.30 बजे गुरुदेव राज जी केसूपुरा, श्रीमान सुभाष जी, प्रिंसीपल देव समाज स्कूल जी अकबरपुर, श्रीमान जगीर सिंह जी अपने साथियों समेत, सबने मिलकर भजनों का गान किया। श्रीमती सुदेश खुराना, और अन्य स्त्रियां भी शामिल होती गई । हर भजन के बाद जोश से भरकर जय ध्वनि होती रही। सूर्य उदय के साथ ही "प्रगटे देव गुरू भगवान जीवन ज्योति देने वाले" भजन की गूंज होने लगी। इसके बाद श्रीमान किशन सिंह जी चौहान ने स्टेज पर चढ़कर उच्च भावों से भरकर इस मुबारिक दिन की सब साथियों को मुबारकबाद दी। गुरू महाराज के खानदान की विशेष हस्तियों, उनके पड़दादा तक के सुनहरी इतिहास, अग्निहोत्री यज्ञ और अन्य महानताओं का पुरज़ोर ब्यान किया। उन्होंने सबको जोश से भर दिया। उसके बाद श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने अपने सौभाग्य, धर्म सम्बन्धियों के सौभाग्य, हमारे देश के सौभाग्य और सारे विश्व के सौभाग्य का श्रद्धा भरपूर ब्यान किया। इस आत्मिक सूर्य का 169 वर्ष पहले आगमन हुआ। नेचर के विकास क्रम ने इतनी बड़ी छलांग मारी कि मनुष्य जगत में देव जीवन धारी देवात्मा का आर्विभाव हो गया। आज का दिन विशेष खुशीयां मनाने का दिन है। सब को कोटि कोटि बधाई देने का दिन है। आज का दिन अधिकारी आत्माओं के लिए जीवन दाता पाकर अपने जीवन को बचाने का दिन है। आज के ही दिन देवात्मा के जीवन ब्रत ग्रहण किया। नौकरी छोड़ी। फिर देव समाज स्थापन की और इसके लिए घोर संग्राम वा तप किया। उनके त्याग और इस प्रकार के समर्पण के आगे झुकें। इन सबको याद करके हमारे लिए त्याग करने और अपनी अहुतियां देने का दिन है।

इसके बाद बैंड बाजे वालों ने मुबारकबाद की धुन बजाई। कई धर्म सम्बन्धी नाच करने लगे। धन्यवाद महसूस कर रहे थे। यह सब दृश्य अधिकारी आत्माओं को जोश और उच्च रस से भर रहा था।

विशेष सभा

सभापति श्रीमान यशपाल जी भल्ला, विषय :– भगवान देवात्मा का अद्वितीय परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके लिए हमारी तरफ से कुर्बानियों की ज़रूरत और धन और जन की अपील।

एक भजन के बाद बहुत सुन्दर फूलों के हार से छवि द्वारा गुरू महाराज का अर्चन किया गया। फिर देव स्तोत्र के गान और व्याख्या के बाद "अद्वितीय जीवन ब्रतधारी, अद्वितीय महिमा है तुम्हारी" नामक भजन का समूह गान किया गया।

सभापति जी ने सर्वप्रथम सबको गुरू महाराज के जन्म दिन की मुबारकबाद दी, फिर उन्होंने फरमाया कि नेचर की किस विकासकारी घटना के कारण इस पावन दर पर आने का सौभाग्य मिला है। नेचर में शक्तियों का कारज हर समय जारी है। विकासकारी शक्तियों का पलड़ा सदा भारी रहा है। इन विकासकारी शक्तियों ने ही देवात्मा को आर्विभूत किया है। यह अति वचित्र घटना है। नेचर की विकासकारी शक्तियां लक्ष्य वहीन नहीं है। निर्जीव शक्तियों से जीवित अस्तित्व अर्थात पशु, पौधे और मनुष्यों की उत्पत्ति हुई है। देवात्मा का आर्विभूत होना एक विशेष नहीं, अद्वितीय घटना है यह आर्विभाव धर्म का आदर्श, सच्चा जीवन दाता और सच्चा उपास्य देव है। यह अधिकारी आत्माओं के लिए नेचर का नायाब दान है।

सभापति जी ने श्री अकबरपुर को याद करके कहा कि आओ हम सब मिलकर कामना करें कि यह महोत्सव मुबारक हो और अमृत की धारा बहे। इस दिन की महिमा के विषय में कनल जी फरमाते हैं कि देव युग शुरू हो चुका है। उसकी एक कड़ी यह सभा है, दीन और नम्र बनो। यहां से उच्च देव प्रभावों की झोलियां भरकर ले जाओ और जाकर बांटो। यह कहकर कनल जी फूट फूट कर रोने लग जाते थे। श्रीमान हितैशी सिंह जी फरमाते थे कि यहां आकर हमने अपने ऊपर बड़ी मेहरबानी की है। इस पावन महोत्सव पर आना हमारा महा सौभाग्य है। रोटी खानी रोटी पर कोई मेहरबानी नहीं है। बिमार का हस्पताल जाना, हस्पताल पर वा दवाई पर मेहरबानी नहीं है। भगवान फरमाते हैं कि यह अद्वितीय तीर्थ स्थान स्थापित हो गया है। मैं हित अनुराग का पागल तुम्हारी भलाई के लिए आ गया हूं। ऐसा सच्चा भलाई का कारज और कहीं नहीं। हितकर और अद्वितीय समाज को अपना समझो। भगवान इस अवसर की सफलता के लिए जान की बाजी लगाते रहे हैं। उन्होंने 1927 – 1928 में अथाह संग्राम किया, परन्तु ज़माने का सितम देखो, परन्तु भगवान देवात्मा अपनी सेहत के कारण उसमें शामिल नहीं हो सके। अथाह संग्राम करके रोगी हो गए। मैं सोचता हूँ कि हमारे दिल में मांस का टुकड़ा नहीं, पत्थर है। वह फरमाते हैं कि मैं पहले 10 वर्षों में पूरी बीस रातें भी नहीं सो सका। यह सारा त्याग और संग्राम मनुष्य मात्र के लिए था। उन्हें आर्शीवाद पत्र भेजना पड़ा। उन्होंने प्रतिदिन सफलता के लिए शुभ कामना वा मंगल कामना की। गर्मी में भी एकता आश्रम मिंटगुमरी में आर्शीवाद पत्र भेजा। इस मिशन के लिए धर्म अभिलाषी अधिकारी आत्माओं की आवश्यकता है और अधिकारी बनकर बैठने की भी ज़रूरत है। यदि देव रूप की झलक सामने न आए तो यहां आने का कोई लाभ नहीं।

जीवन व्रत धारण करना देव शक्तियों की मज़बूरी थी। 17 अगस्त 1884 को गुरू महाराज श्री अकबरपुर गए। अपने गुरू के लिए श्रद्धा का प्रकाश किया। लाहौर पहुँच कर बह्मों समाज के नवीन चन्द्र जी को मिले। बिरादरे हिन्द की स्तुति में एक पत्र पढ़कर सुनाया। एक मुसलमान श्रद्धालु ने कहा था "मेरी दरवाजा खोलो, भगवान आए हैं।"

गुरू महाराज को मेज़र टक्कर, मेरी कारपैंटर, महात्मा बुद्ध और कई आत्माओं की कुर्बानियों से प्रेरणा प्राप्त हुई। जीवन व्रत ग्रहण करने का कारण

फरमाते थे कि मादरे हिन्द (भारत) की तरसनाक हालत देखकर जीवन व्रत ग्रहण करके और भारत के उद्धार के लिए कदम उठाया फिर एक कदम भी पीछे नहीं हटाया। श्रद्धेय कनल जी ने आत्म कथा को कम से कम 100 बार पढ़ा होगा। भगवान ने 1883 में धर्म जीवन में पहले लेख में फरमाया था कि धर्म युद्ध शुरू हो चुका है। धर्म सम्बन्धियों से मैं प्रार्थना करता हूं कि गुरू महाराज ने जो खोज की है, उसमें धर्म के विषय में फरमाया है कि आत्मा में उच्च परिवर्तन लाना धर्म है। हमारा परिवर्तन नेचर के नियमों अनुसार होता है। नियमों का ज्ञान सर्व प्रिय है। भगवान देवात्मा ने आख़िरी उम्र 1929 में देवशास्त्र तीसरे भाग की रचना पूर्ण की। इस ग्रन्थ के 32वें अध्याय को अवश्य पढना। धर्म सम्बन्धियो! देव प्रभावों से कटकर आत्मिक मौत है। इसलिए उच्च ग्रन्थों के पाठ का साधन करना अति आवश्यक है। जीवन बचाना देव प्रभावों का कारज है। देव प्रभाव प्राप्त करने का आसान साध न नियमित रूप से साहित्य को पढ़ना है। देव प्रभाव प्राप्त करने वाले जन चुभने वाले पत्थरों से बदलकर गोल पत्थर बन गए। अधिकारी जन convex लैंज़ बनकर देव प्रभावों के कन्टेनर (container) बन जाते हैं। जब तक उच्च परिवर्तनों की अकांक्षा का जन्म नहीं होता, धर्म का आरम्भ नहीं होता। हमारे पास देवात्मा की छवि वा ग्रन्थ ज़रूर होने चाहिए। सभापति जी ने अन्त में सन्त बजरंग बिहारी जी, श्री कनल जी साहिब, श्रीमान सरदार जमीयत सिंह जी के जीवनों की विशेष घटनाओं का जिक़र किया। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने एक लेख "मैं तुम्हारी नहीं" पढ़कर, अनुभव किया कि देव प्रभावों की गंगा इसमें बह रही थी।

काश! हम उनकी देव गंगा में स्नान कर सकें।

फिर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने धन और जन की अपील की। अपील के रिसपौंस में निम्नलिखित स्थानों पर सत्संग रखने के लिए धर्म सम्बन्धियो ने प्रार्थना की।

(1) मल्लेका, जिला सिरसा (हरियाणा) 11 जनवरी से 14 जनवरी तक

(2) संगरूर (पंजाब) 7 फरवरी 2020 से 9 फरवरी तक

(3) कल्याण जिला भटिंडा - 17, 18, 19 फरवरी 2020 उपरोक्त सत्संगों में अनेक धर्म सम्बन्धियों ने शामिल होने की प्रतिज्ञा की।

इसके बाद धन की अपील की गई, जिसके फलस्वरूप निम्नलिखित जनों ने दान दिया।

दानियों की लिस्ट

1.	श्रीमान बलदेव सिंह परिवार सहित	1,50,000/-
2.	श्रीमान डा० विनोद जी खेड़ा	30,000/-
3.	श्रीमति प्रेम लता जी, पंचकूला	21,000/-
4.	श्रीमान यशपाल जी भल्ला परिवार सहित	11,000/-
5.	डाक्टर नवजोत जी कालरा	5,000/-
6.	श्रीमान मेहर सिंह जी	5,000/-
7.	श्रीमान बलवन्त राए जी कैनेडा	5,000/-
8.	श्रीमान जगजीत सिंह जी लुधियाना	4,000/-
9.	श्रीमति सरोज जी कुक्कड़	2,100/-
10.	श्रीमान कुलदीप जी दाहिया	2,000/-

11. श्रीमान जगतार सिंह जी केसूपुरा	2,000/-
12. श्रीमान क्रिशन सहाय जी	2,000/-
13. श्रीमति अशोका जी अम्बाला	2,000/-
14. श्रीमान सरदूल सिंह जी, इंगलैंड	2,000/-
15. श्रीमान मोहन लाल जी छाबड़ा	1,100/-
16. श्रीमान सुनील जी छाबड़ा	1,100/-
17. श्रीमान किशन सिंह जी चौहान (श्री अकबरपुर)	1,100/-
18. श्रीमान सुरिंद्र भाटिया (गंगा नगर)	1,100/-
19. वीरपाल, समराला	1,000/-
20. डा० सतिन्द्र ढिल्लों	1,000/-
21. श्रीमान विजय कुमार	1,000/-
22. प्रिंसीपल सिरताज सिंह	1,000/-
23. श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी मल्लेका	1,000/-
24. श्रीमान हरि राम गोनियाना	1,000/-
25. श्रीमान अशोक कुमार लुधियाना	1,000/-
26. श्रीमान हरिमिन्द्र सिंह जी	1,000/-
27. श्रीमान दर्शन सिंह जी	1,000/-
28. श्रीमान चमन लाल जी	1,000/-
29. श्रीमान खुशपाल सिंह जी	1,000/-
30. श्रीमान बी. पी. सिंह जी, पदमपुर	1,000/-
31 श्रीमति प्रीतम कौर जी, पटियाला	1,000/-
32. रमेश कुमार जी गर्ग	1,000/-
33. श्रीमान खेम चन्द्र जी, गंगानगर	1,000/-
34. श्रीमान दूनी चन्द जी, गंगानगर	1,000/-
35. श्रीमान दीवन चन्द्र जी, गंगानगर	1,000/-
36. दीवान ऐंड सन्ज शौप	1,000/-
37. श्रीमति देव प्रीत पंचकूला	500/-
38. श्रीमति वंदना जी, गंगानगर	500/-
39. श्रीमान D.P. Mttal जी अम्बाला	500/-
40. श्रीमान सुनील दत्त जी Chandigarh	500/-
41. श्रीमान सुखदेव सिंह जी गोनियाना	500/-
42. श्रीमान सुन्दर लाल जी मल्लेका	500/-
43. श्रीमान जगराज सिंह जी	500/-
44. श्रीमान बलदेव सिंह जी मल्लेका	500/-

45. श्रीमान जगतार सिंह जी		500/-
46. श्रीमान प्रदीप सिंह जी		500/-
47. श्रीमान श्रेष्ट जी अरोरा		500/-
48. Ruby Kulyan		500/-
49. श्रीमान ओ. पी. वर्मा		500/-
Misc.	=	1700.00
Total Cash	=	1,25,790.00
Cheques	=	2,00,000.00
Sale of Books	=	7,580.00

दोपहर 1.30 बजे

बच्चों की सभा के बाद भजनों का गान किया गया जिसमें मैडम पूजा जो बहुत अच्छी Singer हैं और उसको रोज़ी मैडम ने बहुत मेहनत से 5-6 भजन जैयार करवाए और उन्होंने अपनी सुरीली आवाज़ से समय बांध दिया। एक लुधियाना के जन ने भजन गाया अन्त में श्रीमान जगदीष जी ने भाव पूर्ण एक महिमा विषयक भजन का गान किया और अन्त में डा० विनोद जी खेड़ा का लैक्चर हुआ

डा० विनोद जी खेड़ा

परम पूजनीय भगवान् देवात्मा के 169वें शुभ जन्म महोत्सव के विशेष दिन अर्थात 13 दिसम्बर की शाम को पब्लिक लेक्चर हुआ जिसके सभापति थे श्रीमान बल बहादुर सिंह जी। श्रीमान डॉक्टर विनोद खेड़ा जी ने Lecture दिया जिसका विषय था "विज्ञान की नज़र में आत्मा"। यह भाषण परम पूजनीय भगवान् देवात्मा द्वारा मनुष्य आत्मा के बारे में किये गए वैज्ञानिक अनुसंधानों पर आधारित था। सभापति जी ने श्रीमान डॉक्टर विनोद खेड़ा का परिचय करवाया और लेक्चर की कार्यवाही आरम्भ हुई।

वक्ता ने उपस्थित जनों से एक प्रश्न पूछा कि हमारी जीवनी शक्ति या आत्मा हमारे शरीर में किस जगह रहता है? यद्यपि इस प्रश्न का उत्तर देना साधारण व्यक्ति के लिए बहुत कठिन है परन्तु DAV College, Chandigarh के रिटायर्ड प्रिंसिपल डॉक्टर के. एसं आर्या जो Botany के विशेषज्ञ हैं, ने इनका सही उत्तर दिया कि आत्मा मनुष्य के हर जीवित सेल में वास करता है।

आत्मा के बारे में विभिन्न धर्मों की गप्पों का संक्षेप में वर्णन करते हुए वक्ता ने बताया कि मैं विज्ञान का विद्यार्थी होकर इतना दावे के साथ कह सकता हूँ कि हमारी आत्मा भी इस विश्व के अन्य अस्तित्वों की तरह इसी सम्पूर्ण विश्व अर्थात नेचर का एक हिस्सा है। इसलिए आत्मा को जानने के लिए हमें नेचर और उसके नियमों के विषय में ज्ञान होना अत्यावश्यक है, किसी भी और तरह से नहीं, दुनिया भर के सभी धर्मों ने नेचर और उनके विज्ञान-मूलक नियमों को ignore करके बहुत बड़ी भूल की हैं।

जैसे गप्पें हज़ारों और शायद लाखों हों, परन्तु विज्ञान सारी दुनिया के लिए एक ही है, क्या हर मनुष्य के लिए, चाहे वह चीनी हो या जापानी, यूरोपियन हो या अमरीकी, भारतीय हो या पाकिस्तानी। क्या ईसाई धर्म के अनुयायियों, इस्लाम के अनुयायियों, बौद्धों, जैनियों, यहूदियों या किसी और धर्म के मानने वालों के लिए विज्ञान की शिक्षा अलग अलग है? उत्तर नहीं में ही मिलेगा। उसी तरह से आत्मा के

विषय में विज्ञान या सच्चा ज्ञान भी एक ही हो सकता है **अलग अलग नहीं।**

इसलिए आज इस समय हमें इस विषय को समझने के लिए विज्ञान का सहारा ही लेना पड़ेगा न कि मिथ्या कल्पनाओं पर आधारित किसी धर्म मत का।

वक्ता ने प्रश्न किया कि **नेचर क्या है?** सही उत्तर जो मिला वह था कि हर छोटे बड़े, जड़ या शक्ति संपन्न अस्तित्व चाहे वह कहीं भी हों, उन सब के समूह का नाम नेचर या प्रकृति या विश्व है। इतने से हमें यह बात साफ़ हो जानी चाहिए कि नेचर के हर अस्तित्व पर, **जिसमें आत्मा भी शामिल है, नेचर के नियम लागू होंगे**, इसमें किसी का कोई लिहाज़ विहाज़ नहीं है, आगे चलकर उन्होंने बताया कि परिवर्तन के नियम के अनुसार नेचर के हर अस्तित्व के लिए **हर क्षण परिवर्तित** होना ज़रूरी है। इसमें हमारा अपना अस्तित्व जो शरीर और आत्मा को मिलाकर बना है, वह भी शामिल है। यह **परिवर्तन दो प्रकार** से होता है।

विनाश और विकास। नेचर में हरेक अस्तित्व पर **विनाश और विकास के नियम** लागू होते हैं, यह हर एक अस्तित्व को बदलकर या पहले से बदतर बना रहे हैं या उसे पहले से बेहतर रूप और गुण प्रदान कर रहे हैं। नेचर का कोई भी अस्तित्व परिवर्तन या विनाश और विकास के नियमों से बच नहीं सकता।

नेचर में एक और विशेष नियम काम कर रहा है जिसे वैज्ञानिक लोग Law of Differentiation यानि विभिन्नता का नियम कहते हैं। इसी नियम के कारण हर अस्तित्व एक दूसरे अस्तित्व से विभिन्नता रखता है, यहाँ तक कि दो जुड़वां बच्चे भी एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

इन्हीं नियमों के अनुसार हमारा सौर मंडल बना। भौतिक शक्ति के विकास से जीवनी शक्ति का विकास हुआ और एक सैल के जीव विकसित हुए। इस Process में लाखों साल लग गए। वहीं से चलते चलते हज़ारों सालों के विकास क्रम में **आकार को गठन करने वाली यानि Body को Constitute करने वाली जीवनी शक्ति उत्पन्न हो गई।** नेचर के विकासकारी विभाग द्वारा लगाई गई अपने समय की यह भी एक बहुत बड़ी छलांग थी। वक्ता ने कहा कि मैंने तो लाखों वर्षों की लम्बी इस छलांग को कुछ सैकिंड में ही खत्म कर दिया।

इसी आकार निर्माणकारी जीवनी शक्ति से पौधों, फूल और फल पैदा हुए। विकास में Process के चलते चलते गठन प्राप्त पशु जगत के अनगिनत जीवधारी और उनके आगे बढ़कर हमारा यह मनुष्य जगत अस्तित्व में आया।

धर्मों की कल्पना मूलक गप्पों को उड़ा देने के लिए नेचर के विकासकारी विभाग ने धीरे धीरे ऐसे व्यक्ति पैदा किये जिन्होंने अपने सच्चाई खोजने के प्यार के भावों के विकास से तथा अपनी मानसिक शक्तियों की रोशनी में भौतिक या बाहरी दुनिया की हर घटना को चीर फाड़ कर देखा और हमें अनोखी सच्चाइयां प्रदान कीं जिस कारण धीरे धीरे कल्पना मूलक धार्मिक गप्पों का सर्वनाश होता चला गया। इन्हीं लोगों को हम वैज्ञानिक कहने लगे।

हमारी नेचर का हर अस्तित्व जिन 2 चीज़ों में बना हुआ है उनका नाम है जड़ या matter और शक्ति या energy सरल भाषा में जिसे हम अपनी आँखों से या microscope से देख सकते हैं, वह जड़ पदार्थ हैं क्योंकि भौतिक शक्ति अति सूक्ष्म होने के कारण दिखाई नहीं देती, इसलिए मैं भी लाख कोशिश करके उसकी तस्वीर बाहर की आँखों से नहीं बना सका। कैसे बना सकता था? हमें जो लगता है हम Gravitation अर्थात गुरूत्वाकर्षण की शक्ति को या बिजली या चुम्बक की शक्ति को देख सकते हैं।

यह हमारा बहुत बड़ा भ्रम है। डॉ. खेड़ा ने इसे तजुर्बा करके समझाया। उन्होंने बहुत अच्छे ढंग से समझाया कि किस प्रकार हम इन शक्तियों की वर्तमानता को इनके प्रभावों से जान सकते हैं। Gravitation जैसी साधारण परन्तु निर्जीव शक्ति को समझने के लिए मनुष्य को हज़ारों साल सबर करना पड़ा। उसके लिए हमें Isaac Newton जैसे व्यक्तित्व की ज़रूरत थी। इसी प्रकार मनुष्य की जीवनी शक्ति के विषय में अनुसंधान करने के लिए नेचर को हज़ारों साल लग गए और परम पूजनीय भगवान् देवात्मा के आविर्भाव का इंतज़ार करना पड़ा।

डॉक्टर खेड़ा ने प्रश्न किया कि जब मनुष्य भौतिक शक्तियों को ही नहीं देख सकता, फिर मनुष्य जीवनी शक्ति को कैसे देख पाता? यही एक बहुत बड़ा कारण है कि परम पूजनीय भगवान् देवात्मा की अद्वितीय देव ज्योति संसार में प्रगट होने से पहले आत्मा या मनुष्य की जीवनी शक्ति का ज्ञान संभव नहीं हो सका। जो लोग इस जीवनी शक्ति को समझना ही नहीं चाहते और इसलिए उसे नहीं मानते, उनके लिए मैं कहूंगा कि **"मैं न मानूं" का किसके पास इलाज है?**

हमे सब को पता है कि जब कोई व्यक्ति मरता है, तो उसका शरीर, दिमाग और DNA इत्यादि तो ज्यों के त्यों रहते हैं, फिर कौन सी चीज़ है जो हमारे शरीर में नहीं रहती। यही तो है हमारी जीवनी शक्ति या आत्मा।

10 मई 1901 से पहले दुनिया यह मानती थी कि पौधों में जान नहीं होती। हमारे देश के वैज्ञानिक सर जगदीश चन्द्र बोस ने विश्व के सामने यह साबित कर दिखाया कि पौधों में भी जान होती है। पौधे Reproductive System रखते हैं और वे अपने वातावरण के बारे में ज्ञान रखते हैं। कितनी महान खोज! बोस हमारे देश का गौरव बढ़ाने वाले कितने महान वैज्ञानिक!!

मनुष्य की जीवनी शक्ति को समझने से पहले **पौधों की जीवनी शक्ति को समझना आवश्यक है। आम और आक की जीवनी शक्तियों** का उदाहरण दिया। आम और आक एक से शब्द हैं, दोनों शब्द आ से शुरू होते हैं। दोनों को एक सी ज़मीन में बो दो, एक से कुएँ का पानी दो, एक सा वातावरण प्रदान करो। नतीजे फ़र्क फ़र्क आएँगे। आम का नाम सुन कर लगभग सभी के मुँह में पानी आ जाता है। वक्ता ने उपस्थित जनों से पूछा कि "आक के बारे में सुनकर आपमें किस किस के मुंह में पानी आया"?

भगवान् देवात्मा ने बताया है कि आम की विशेषता उसकी गुठली या बीज से ही होती है। या मैं यूं कहूं कि उसकी गुठली में वर्तमान उसकी जीवनी शक्ति में ही होती है तो कुछ गलत न होगा। जीवनी शक्तियों में अंतर के कारण आम और आक के पौधे और फलों में अंतर आ गया। इसी प्रकार यहाँ गुलदौदी के फूल शोभायमान हो रहे हैं। हर फूल और पत्ता एक दूसरे से अलग है, इसका कारण भी बीजों में वर्तमान इनकी जीवनी शक्तियों की विभिन्नता हैं इनकी जीवनी शक्तियों ने उनके अलग अलग DNA का निर्माण किया है जिसके फलस्वरूप इनमें विभिन्नता आ गयी है। इसी प्रकार भगवान् ने जीवनी शक्ति के होने और नष्ट हो जाने का एक और उदाहरण दिया है कि यदि गेहूं या फूल फलों को बीजों को उबलते पानी में डाल दो, फिर इन बीजों को बढ़िया मिट्टी, पानी, हवा आदि प्रदान करो, या किसी उबले हुए अंडे को बैस्ट मुर्गी के नीचे सेने की कोशिश करो, **Result आएगा nil/nil.** वक्ता ने श्रोतागणों से पूछा कि क्या अब उन गेहूँ के दानों में से या बीजों में से या उबले अंडे में से आप या कोई और, **या** कोई कहलाने वाला परमात्मा या देवी या देवता कोई पौधा या मुर्गी का

बच्चा पैदा कर पाएगा? उत्तर मिला **हरगिज़ नहीं।** इसी तरह यदि किसी मानव स्त्री के 4 - 5 महीने के बच्चे का गर्भपात हो जाये, तो उसकी जीवनी शक्ति का निर्माणकारी काम बंद हो जाता है और अब उस बच्चे का शरीर नही बना सकती। दुनिया का कोई doctor, या सर्व शक्तिमान कहलाने वाला कोई भी कल्पित अस्तित्व अब उस बच्चे का शरीर निर्माण नहीं कर सकेगा।

हमारी जीवनी शक्ति के साथ भी यही नियम काम करता है। इन्हीं बीजों या अण्डों या 4 – 5 महीने के भ्रूण की तरह हमारे विकास के लिए भी अनुकूल सामान मिलने आवश्यक है। इसके उलट विकासकारी सामान न पाकर और बुरे प्रभावों में आकर हम स्वयं भी बर्बाद होते हैं और औरों को भी बर्बाद करते हैं। डाक्टर खेड़ा ने पूछा कि ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए कि जब वह जीवनी शक्ति ही न रही जो मनुष्य के शरीर का निर्माण कर रही थी, फिर शरीर निर्माण और उसकी पालना इत्यादि कौन कर सकता है?

वक्ता ने एक श्रोतागण को संबोधित करके पूछा कि भिन्न भिन्न धर्मों के लिए आत्मा के विषय में शिक्षा भी एक जैसी और विज्ञान की अटल भूमि पर स्थापित क्यों नहीं होनी चाहिए? उन्होंने इसका कारण बताया कि इन कल्पना मूलक धर्मों में से अधिकतर विज्ञान के युग में पैदा ही नहीं हुए, फिर ये वैज्ञानिक दृष्टिकोण कैसे रख सकते थे? जो इस विज्ञान के युग में पैदा भी हुए, उन्हें अपनी दुकानदारी से मतलब है, विज्ञान से कोई लेना देना ही नहीं है।

आत्मा के विषय में पूर्ण वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने और बताने के लिए किस चीज़ की नितांत आवश्यकता है? उत्तर है कि सम्पूर्ण सच्चाई और भलाई के लिए अनुराग की शक्तियां और हर प्रकार के झूठ और बुराई के लिए पूर्णांग विराग या घृणा की शक्तियों की जो कि परम पूजनीय भगवान् देवात्मा को विरसे में प्राप्त हुईं और जिनके विकास के लिए नेचर ने गज़ब का इंतज़ाम किया जिस की कथा एकदम निराली और आश्चर्यचकित करने वाली है। इस कहानी को दर्शाने वाली पुस्तकें "मुझ में देव जीवन का विकास" दोनों खण्डों में अभी छपकर उपलब्ध है।

यह भारत वर्ष के लिए परम सौभाग्य और अद्वितीय गौरव का विषय था और है कि भारत भूमि से ही जीवनधारियों में से पौधों की जीवनी शक्ति की वर्तमानता की भी जो खोज हुई और मनुष्य की जीवनी शक्ति की भी। परम पूजनीय भगवान् देवात्मा द्वारा अति घोर संग्रामों और कष्टों के बाद हम मनुष्य मात्र के लिए इसे खोजा। उन्होंने ही खोजा है कि पौधे, पशु और मनुष्य यह तीनो ही जीवनी शक्ति विशिष्ट हैं और इन तीनों की जीवनी शक्तियाँ की कुछ common विशेषताएं या मूल लक्षण हैं जो निर्जीव या बेजान शक्तियों में नहीं पाए जाते। वे हैं :-

सभी जीवनधारियों की जीवनी शक्तियां अनुकूल अवस्था मिलने पर चार किस्म के काम करने की योग्यता रखती हैं :

1. एक या दूसरी तरह के जीवित शरीर के निर्माण करने अर्थात बनाने का काम।
2. हमारे (यानी पौधों के, पशुओं के, और मनुष्यों के शरीरों को) पालने का काम।
3. उस शरीर की एक या दूसरी सीमा तक रक्षा करने का काम
4. किसी एक या दूसरी विधि से एक से अनेक हो जाने का काम।

जीवनी शक्ति चाहे पौधों की हो, चाहे पशुओं की, चाहे मनुष्यों की, सभी को हम जीवनी शक्ति ही कहते हैं। मनुष्यों की जीवनी शक्ति को

हमने एक ख़ास नाम दिया है, आत्मा या Soul या Spirit.

वक्ता ने कहां कि अब हम मनुष्य के आत्मा की परिभाषा पर आ पहुंचें। मनुष्य का आत्मा एक विशेष प्रकार की गठन प्राप्त जीवनी शक्ति है। जैसे हामरे शरीर की एक अपनी गठन है, वैसे ही हमारी जो आत्मा है वह भी शक्तियों से संगठित है। उसकी शक्तियों की अपनी एक विशेष गठन है। **मनुष्य की आत्मा में चार प्रकार की शक्तियों की उत्पति हुई है।** जैसे हमारे शरीर की एक अपनी गठन है, वैसे ही हमारी जो आत्मा है वह भी शक्तियों से संगठित है। उसकी शक्तियों की अपनी एक विशेष गठन है। मनुष्य के आत्मा में चार प्रकार की शक्तियों की उत्पत्ति हुई है जैसे

1. शरीर का निर्माण करने, उसका पालन करने, इस पर शासन करने और उसे जीवित रखने वाली शक्तियां।

2. मानसिक या दिमागी शक्तियां, जैसे कल्पना शक्ति, धारणा शक्ति, स्मरण शक्ति इत्यादि

3. सुख दुःख उत्पादक विविध प्रकार की भाव शक्तियां, जैसे सफाई और गंदगी, संगीत और शोर, जिस्मानी, दिमागी और हार्दिक सुख और दुःख उत्पादक भाव शक्तियां इत्यादि।

4. सुख के प्रति आकर्षण या अनुराग और दुःख के प्रति विकर्षण या विराग की भाव शक्तियां। इन्हीं आकर्षण और विकर्षण शक्तियों से ही हमारी आत्मा के नीच सुख अनुराग और नीच घृणाएँ जन्म लेती हैं, यही तो मनुष्य के आत्मा के रोग या बीमारियाँ है जिनका यदि समय रहते इलाज न हो पाए तो आत्मिक मौत हो जाती है। उस आत्मिक मौत से बचने और आत्मा के जीवन को उच्च सुखों से भरने के लिए भगवान् देवात्मा के साथ सम्बन्ध स्थापन करने की नितांत आवश्यकता है। आत्मिक विकास के लिए उच्च सुख अनुराग जैसे श्रद्धा, कृतज्ञता, हानि परिशोध, दया ईमानदारी इत्यादि पैदा करने की ज़रुरत है और हर नीच चिंता और गति के लिए उच्च घृणा पैदा करने की ज़रुरत है जिसे भगवान् के इतने सारे शिष्यों ने कर के दिखाया है और यह हाल उनमें से कुछ की तस्वीरों से सजा हुआ है।

नीच सुखों के अनुरागों में से एक शराब और drugs के नशे के सुख अनुराग ने ही हमारी इस दुनिया को बर्बाद कर के रख दिया है। कैसे स्त्रियों और मासूम बच्चे इस एक महा पाप का शिकार हो रहे हैं, वह दृश्य देखा नहीं जाता। ऐसे ही हमारा संसार न जाने कितनी नीचताओं और मिथ्या का शिकार बन चुका है। इस सब के पीछे हमारे आत्मा की नीच शक्तियां या नीच अनुराग और नीच घृणाएँ ही तो हैं।

वक्ता ने सभापति जी से पूछा कि यदि आप ने जो बीज बोए हैं उन्हें अच्छी मिट्टी या ठीक पानी इत्यादि न मिलें या फिर पौधे परस्फुट्टित होने के साथ उन्हें कीड़े लग जाएँ तो क्या उन बीजों की जीवनी शक्ति अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर पाएँगी?

जैसे पौधों में कीड़े लग जाते हैं और समय पर उनका इलाज न होने पर वे नाश को प्राप्त होते हैं, ऐसे ही मेरे जीवन में, या यूं कहूं हम सब के जीवनों में इर्द गिर्द के वातावनरण से आत्मिक कीड़े लग जाते हैं। वक्ता ने अपने जीवन में कुछ देर पहले घटी अपने अहं और नीच घृणा की एक घटना बतायी जिसमें उन्होंने पार्क में सैर करते वक्त अपने अहं पर चोट खाकर किसी व्यक्ति को नीच घृणा की थी परन्तु उस व्यक्ति को इस का कुछ भी पता नहीं था, इसलिए वह व्यक्ति जब भी उनके पास से गुज़रता था, तो वक्ता के मन में उसके लिए दूरी आ जाती थी जो नीच घृणा की निशानी है। परम पूजनीय भगवान् देवात्मा की अपार कृपा से निज के साधन में सौभाग्य से वक्ता को भगवान् की अद्वितीय देव ज्योति में

अपनी अहंजात नीच घृणा के सम्बन्ध में देव ज्योति मिली और भगवान के अद्वितीय देव तेज़ मिलने पर उसके लिए परिशोध करने की शक्ति मिली। वक्ता उस व्यक्ति को फुलबहरी का इलाज करवाने हस्पताल ले गए और वहां पर उन्हें भी और वहां वर्तमान डॉक्टरों को भी अपनी अहं की चिंता और नीच घृणा के बारे में बताया कि उनसे यह परिशोध भगवान देवात्मा ने किस प्रकार करवाया।

वक्ता ने श्रोतागणों से पूछा कि क्या भगवान् की देव ज्योति के इलावा कोई और ज्योति मुझे मेरी नीच घृणा दिखा सकती थी जबकि उस व्यक्ति को भी मेरी इस चिंता का कोई ज्ञान नहीं था? क्या भगवान् के देव तेज के बिना मुझसे मेरी नीच घृणा की चिंता का कोई भी परिशोध करवा सकता था?

वक्ता ने अपने पडनाना जी श्रीमान डॉक्टर सिरी राम जी, नानाा श्रीमान मदन मोहन लाल जी, श्रद्धेय दादी जी के पिता पटवारी चंदू लाल जी और दादा श्रीमान देव बल जी के भगवान् देवात्मा की शरण में आकर आये शुभ परिवर्तन का संक्षिप्त हाल सुनाया और बताया कि किस प्रकार उनके ही ताया और चाचा जी जो कि देव समाज में ही जन्में और पले थे, उनके परिवारों में दुनियादारी का कीड़ा लग जाने से उनके परिवारों में कैसे पापाचार आरम्भ हो गया और उनके श्रद्धेय पिता श्रीमान प्रेम बल जी को सारी उम्र भगवान् देवात्मा के मिशन की सेवा में जीने और मरने के लिए विशेष पूँजी और वातावरण मिला जिसके लिए हम बच्चे बहुत सुरक्षित हो गए। इसके लिए भगवान् का जितना धन्यवाद दिया जाए उतना ही थोड़ा हैं।

वक्ता ने आह्वान किया कि यदि श्रोतागणों में से कोई इन भाव शक्तियों के विषय में और गहरा अध्ययन करना चाहे तो पूजनीय देव शास्त्र तीसरे भाग में इन के विषय में बहुत विस्तार से वर्णन किया गया है जिसका नया reprint अभी छपकर आया है और उपलब्ध है।

वक्ता ने कहा कि Lecture के शुरू शुरू में आपसे एक प्रश्न पूछा था कि आत्मा शरीर में रहती कहाँ है? उसका उत्तर देने का समय आ गया। आत्मा हमारे शरीर के हर cell में वास करती है। वहीं से हमारे सूक्ष्म cell बनते हैं जो हर चिंता तथा क्रिया के साथ मज़बूत होते हैं या बिगड़कर नष्ट होते रहते हैं। यही सूक्ष्म cell इस पृथ्वी पर मरने के पश्चात हमारे परलोक के निवास के लिए सूक्ष्म शरीर निर्माण में काम आते हैं।

वक्ता ने कहा कि अब आप का मुझ से पूछने का हक बनता है कि जीवनी शक्ति यानी आत्मा के शरीर को छोड़ जाने के बाद क्या होता हैं?

यहीं से तो हमारे जीवन का बहुत महत्त्वपूर्ण अध्याय शुरू होता है। परलोक का जीवन, इस विषय में वक्ता ने सन 1959 या 1960 के साल की परलोक के सम्बन्ध में अपनी आँखों देखी घटना का संक्षिप्त वर्णन किया। देव समाज के एक पुराने कर्मचारी श्रीमान भक्त सिंह जी ने अम्बाले में परलोक का साधन किया था जिसमें प्राप्त जानकारी 100% सही प्रमाणित हुई।

यहाँ इस पृथ्वी पर जिन्होंने बहुत अधिक घटिया या पापों और बुराइयों से औरों को हानि पहुंचाने का जीवन नहीं बिताया वे अपनी अपनी योग्यता के अनुसार परलोक के किसी नीचे या ऊपर के लोक में जाने के अधिकारी बनते हैं। परलोक पर भी हमने एक विज्ञान पर आधारित पुस्तक "परलोक - सच्चाई की रौशनी में" छापी हुई है, इस विषय में रुचि रखने वाले जन उस पुस्तक का भी अध्ययन करके अधिक ज्ञान और लाभ उठा सकते हैं।

वक्ता ने कहा श्रीमान भक्त सिंह जी द्वारा करवाए गए इस परलोक के साधन ने उनके और उनके परिवार के भीतर परलोक के वर्तमान होने के

बारे में अटूट विश्वास पैदा कर दिया जिसके लिए हम सदा उनके कृतज्ञ रहेंगे।

परम पूजनीय भगवान को दिल के गहरे भावों से धन्यवाद देकर वक्ता ने अपना स्थान ग्रहण किया। सभापति जी ने डॉक्टर खेड़ा के वक्तव्य की बहुत सराहना की। यह सारा लैक्चर विज्ञान पर आधारित आत्मा के विषय में बहुत ही ज्ञान वृद्धक था।

शाम 6 बजे दीपमाला की गई। अलोचना सम्बन्धी सुझाव देने के लिए धर्म सम्बन्धियों को प्रार्थना की गई, जिस में 1-2 अच्छे सुझाव आए।

<u>शनिवार 14 दिसम्बर, सुबह 9.00 बजे :</u>

विषय - सेवक, सेविकाओं का ग्रहण, श्रेणीयों में उन्नति, पारिवारिक अनुष्ठान।

सभापति श्रीमान किशन सिंह जी चौहान

श्रीमान चौहान जी ने कई प्रकार की गुरू महाराज, समाज के विषय में उपयोगी जानकारी दी और फिर सेवक ग्रहण का कार्यक्रम आरम्भ हुआ।

रमेश जी, जो कई वर्षों से आश्रम में सेवा कर रहे हैं, वह सुखदेव जी लंडन के निकटी सम्बन्धी हैं। वह सत्संग की सभाएं सुनते रहते हैं और उनसे प्रभावित होकर बहुत खुशी से सेवक बनने को तैयार हुए। किशन सिंह जी ने उनको प्रतिज्ञाएं कराई और उनके गले में फूलों का हार डालकर उन्हें सेवकी में ग्रहण किया, धर्म सम्बन्धियों ने उन्हें फूलों के हारों से लाद दिया

<u>10.30 बजे, भाव प्रकाश की सभा :-</u>

इस सभा के सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी थे। उन्होंने पहले अपनी एक नीच गति के विषय में बताया फिर धर्म सम्बन्धियों से प्रार्थना की कि वह भाव प्रकाश करें, इधर उधर की बातें न करें जो लाभ हुआ है, केवल उसका ब्यान करें।

श्रीमान गोपाल कृष्ण जी

श्रीमान भल्ला साहिब जी की सभा ने विशेष रूप से प्रभावित किया है। मुझे अपने घमंड वा नीच घृणा की गतियां सामने आई हैं। अपनी सूक्ष्म निगाह की नीचता नज़र आई है और इस पर विचार शुरू हो गया है। खेड़ा साहिब के लैक्चर से लगा है कि नीच भावों पर बर्फ पड़ गई है कुछ दब गए हैं, शायद कभी मर जाएं। एक बजुरग को कुछ गल्त बोल दिया, अपना पतन कर लिया और उस समय मुझे पता ही नहीं लगा। घमंड की गतियां होती रहती हैं। सूक्ष्म चिन्ताएं बुरी करतूतों के रूप में नज़र आई हैं। किसी ने सन्मान न दिया तो मेरा बुरा हाल हो जाता है। मेरा सौभाग्य है कि मुझे ये दर मिल गया। ग़ल्तियों के लिए शर्मिंदा हूं। इस दरबार में आकर धन्य धन्य हूं।

श्रीमान बी. पी. सिंह जी (पदमपुर)

जब से सेवक बना हूं, आज पता लगा है कि बहुत थोड़ा भला हुआ है। यहां के सत्संग के लिए और श्री अकबरपुर की यात्रा के लिए प्रेरणा मिली है। कलास रूम की तरह लग रहा है। श्रीमान चौहान जी वा भल्ला साहिब जी की सहायता की ज़रूरत महसूस होती है।

श्रीमान सुभाष शर्मा जी (श्री अकबरपुर)

श्रीमान चौहान जी की प्रेरणा से सेवक बना, इस विशेष उपकार के लिए मैं उनका ऋणी हूं। यहां का प्रबन्ध बहुत अच्छा है। मैं नीच और घमंडी हूं। मेरे मां बाप परलोक सिधार गए हैं। पिता समान चौहान जी को भी ग़ल्त बोल जाता हूं। मैं उनसे क्षमा मांगता हूं। यहां का वातावरण सबसे अच्छा लगा। यहां की सभाओं का स्तर बहुत ऊँचा हैं गोपाल जी से मुझे प्रेरणा मिली है। जगदीष जी का भी धन्यवाद करता हूं। मुझे यहां बहुत प्यार मिला है।

श्रीमान पी. सी. दीवान जी

मुझे आप सबकी सहायता की आवश्यकता है। मेरे पारिवारिक जन मिथ्या विश्वासों में फंसे हुए है। मेरा कोई वश नही चलता। यही कामना करता रहता

हूं कि उन्हें भी प्रभाव मिल सकें। मैं समझता हूँ कि मेरी पढ़ाई तो अब शुरू हुई है, ख़त्म नहीं हुई। मेरा परिवार मेरे भीतर आए परिवर्तन को देख रहा है, मेरे व्यवहार बदल गए हैं, मैं प्रतिदिन नेकी की तरफ बढ़ रहा हूं। पहले जैसी उदण्डता, आदेश देना, थानेदारी करना सब चली गई। मेरे पारिवारिक जन लाभ उठा सकें, यही कामना करता हूं।

श्रीमान अनिल कुमार जी

डा० खेड़ा साहिब के लैक्चर से बहुत लाभ हुआ है। उनकी इस सेवा का धन्यवाद करता हूं। उनकी सभा से प्रेरणा मिली है कि जीवन बर्बाद नहीं करना।

श्रीमान किशन सिंह जी चौहान (श्री अकरपुर)

श्रीमान किशन सिंह जी चौहान ने 1966 से कोई महोत्सव नहीं छोड़ा। बार बार लाभ होता रहा है। खुशी भी मिली, परन्तु श्रीमान जी के न आने का दुख भी हुआ। आगे के लिए पनीरी तैयार नहीं हो रही। बच्चों को लाने का प्रोग्राम था, फिर किन्हीं कारणों से नहीं आए। मेरा छोटा पोता नहीं आ सका, उसका भी दुख रहा। मैं यशपाल जी सिंगला से क्षमा मांगता हूं मैं उनको कह बैठा कि आप तो शिष्टाचार भी नहीं जानते।

श्रीमान कुलदीप जी दाहिया

मैं तो वैंटीलेटर पर हूं। मुझ पर इस लोक वासीयों वा परलोकवासीयों की कृपा है। मुझसे अगर कोई गल्ती हुई है, तो क्षमा मांगता हूं। मैं तो meanest of man (घटीया से घटिया) इन्सान हूं। मुझे तकलीफ होती है जब भगवान देवात्मा को सही quote नहीं करते। मुझे धर्म ग्रन्थ पढ़ने में आनन्द मिलता है। देवात्मा की देव बाणी अन्तिम है, इस विषय में मैंने अपने भावों के अनुसार जो कुछ कहा है, उसकी फिर क्षमा मांगता हूं। तसल्ली मिली है माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी की सेहत अब ठीक है। वह बहुत मुश्किलें उठाकर भी हम तक पहुँचते रहे हैं। मैं दीवान जी के आगे झुककर प्रणाम करता हूं। यहां सत्युग है। सबको प्रार्थना है कि पावन ग्रन्थों को अवश्य पढ़ें।

श्रीमान सुखदेव जी गानियाना के बेटे ने निम्नलिखित भाव लिखकर भेजे हैं।

विशेष श्रद्धा और सन्मान के योग्य श्रीमान जी,

सत्य देव की जय

हम विशेष तौर पर मैं और मेरे पिता जी आप की सेहत की बेहतरी के लिए बहुत शुभ कामना करते हैं।

आप ने पहले की तरह प्रेरणा की और हमें हर बार की तरह महोत्सव पर बहुत लाभ हुआ। दिल में नये और उच्च वलवले पैदा हुए हैं। अपने नीच जीवन से निकलने की प्रेरणा मिली है। माता-पिता का उपकारी रूप दिखाई दिया है। मेरे पिता जी को श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के इन शब्दों ने बहुत प्रभावित किया है कि "मैं सवेरे 4 बजे से रात के 10 बजे तक अपनी वा दूसरों की भलाई में समय बिताता हूं।" हमें गुरू महाराज की पुस्तकें पढ़ने की भी बहुत प्रेरणा मिली है। आपने बिमार होते हुए भी हमारे ठहरने का फिक़र किया। मेरे बाबा जी ने इस उमर में महोत्सव पर पहुचने के लिए बहुत त्याग किया। उनका भला भी अवश्य हुआ होगा। काश! हमें देव प्रभावों की और क़दर हो सके। हमारा अधिक से अधिक उनके प्रभावों सें हित हो।

भाव प्रकाश से पहले माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने जो चन्द शब्द लिखवा कर भेजे थे उन्हें पढ़ा गया उसमें उन्होंने सब को इस पावन दिन की मुबारकबाद दी थी और सब आने वालों, सभा करवाने वालों, भजन गाने वालों, लैक्चर देने वालों का धन्यवाद किया। फिर सभापति जी ने सब सेवाकारियों का धन्यवाद किया व आरती का गान वा जय ध्वनि के साथ यह पावन उत्सव समाप्त हुआ।

Published on 5th of the month
20

Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

शेष पृष्ठ 2

का विस्तार बन्द हो। नये वर्ष में राम मन्दिर बनेगा, जिसमें कितने सौ करोड़ रुपये खर्च होंगे, क्या फिर पाप मिट जाएगा? यह करोड़ों रुपये उन गरीब बच्चों पर क्यों न खर्च हों, जो कुपोषण के शिकार हैं, जिन परिवारों के सिर पर छत नहीं, जिन्हें पीने का साफ पानी उपलब्ध नहीं, अशिक्षित बच्चों को शिक्षा नहीं? हमें मन्दिरों, मस्जिदों, गुरूद्वारों की आवश्यकता नहीं, हमें अच्छे स्कूलों, कॉलिजों, यूनिवर्सिटियों और हस्पतालों की आवश्यकता है। सब प्रकार से भारत का पढ़ाई का स्तर गिर रहा है। उसका किसी को फ़िक्र नहीं। हमारे देश का भविष्य ख़तरे में है, नया वर्ष भारत के लिए कोई नई रोशनी लाए। इसकी बाहरी ख़तरों से सुरक्षा हो, भीतर के ख़तरों से रक्षा हो। हमारे रहनुमाओं को सद्बुद्धि मिले, हम तो यही कामना करते हैं।

नये वर्ष के उन्माद में आकर लोग बड़े-2 अपने साथ वायदे करते हैं, परन्तु वह क्षणिक होते है, वह नहीं सोचते कि जिन सुखों की लालसा बढ़ा ली है, वह तुम्हे घसीट कर उसी राह पर डाल देंगी।

हमारे महां सौभाग्य हैं कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा का दर मिल गया। यह नेचर की हमारे ऊपर बहुत बड़ी फेवर(favour) है कि हम मोटे पापों और मिथ्याओं से बच गए। हमारा दृष्टिकोण वैज्ञानिक हो गया, हमारे भीतर कुछ तर्क करने की शक्ति आई है, परन्तु अभी दिल्ली दूर है। अब इससे आगे बढ़ने के लिए बहुत संग्राम और साधन की आवश्यकता है। भगवान की कृपा से मानसिक रूप से हमें कुछ नीच अनुरागों और नीच गतियों का ज्ञान हो जाता है, परन्तु अब नये वर्ष में हम उनसे बचने, उन्हें घटाने का प्रण ले सकते हैं, उसके लिए सत्संग आवश्यक है, जो हमें हमेशा नहीं मिल सकता, पर हमारे पास रोशनी से भरपूर साहित्य है, यदि हम यह प्रण करें कि हमने प्रतिदिन अवश्य ग्रन्थों का पाठ करेंगे, और हो सके तो उससे जो लाग हो लिखेंगे, तो हमारा बहुत भला हो सकता है दूसरी ओर अपनी कमियों पर बहुत चिन्तन कर सकें तभी नया वर्ष हमें बेहतरी की ओर ले जाएगा तभी हमारा नया वर्ष मुबारक हो सकता है।

हम सारे देश की या सरकार की ज़िम्मेवारी नहीं ले सकते, परन्तु स्वयं की ज़िम्मेदारी लें, पहले से बेहतर इन्सान बनें, कोई सेवा के काम करें। यदि नफ़रत का चश्मा उतार कर दया, प्रेम और दरियादिली का पहनें, तभी देश के लिए यह वर्ष मुबारक हो सकता है।

(सुरजीत बराड़)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts